

डॉ. रॉबर्ट वानॉय , किंग्स, व्याख्यान 1

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय , डॉ. पेरी फिलिप्स, और टेड हिल्डेब्रांट

परिचय - शीर्षक लेखकत्व और तिथि

कोर्स परिचय

मैं पाठ्यक्रम के इस परिचयात्मक खंड के लिए आज रात इसे पढ़ने के अलावा और कुछ नहीं करने जा रहा हूँ। मैं इसे हैंडआउट के साथ करना चाहता हूँ क्योंकि इसमें से कुछ थोड़ा जटिल है, और मैंने सोचा कि नोट्स लेने की कोशिश करने की तुलना में आपके लिए इसे लिखित रूप में रखना शायद आसान होगा। एक बार जब हम किंग्स की किताब और उसकी सामग्री पर गौर कर लेंगे, तो मैं ऐसा नहीं करने जा रहा हूँ, और आपको अपने नोट्स लेने पर निर्भर रहना होगा। लेकिन इस परिचयात्मक सामग्री के लिए मैंने आपको हैंडआउट दिया था।

ए. शीर्षक: राजा

पहली बात जिस पर मैं चर्चा करना चाहता था वह है नाम। हिब्रू शीर्षक " मलाकिम " है, जो "राजा" है। इस बात का कोई सबूत नहीं है कि डैनियल बॉम्बर्ग द्वारा 1516-1517 में वेनिस में प्रकाशित हिब्रू बाइबिल के संस्करण तक हिब्रू पाठ में पुस्तक को दो भागों में विभाजित किया गया था। पुस्तक को दो भागों में विभाजित करने की शुरुआत सेप्टुआजेंट द्वारा की गई थी। यह पुराने नियम का ग्रीक अनुवाद है, जिसमें किंग्स और सैमुअल को मिलाकर एक महान ऐतिहासिक कार्य बनाया गया है, जिसका शीर्षक है "फर्स्ट, सेकेंड, थर्ड, फोर्थ बुक ऑफ रेन्स" या "किंगडम्स।" जेरोम ने वल्गेट में इसे "एक, दो, तीन, चार राजा" में बदल दिया। सामग्री का दो भागों में विभाजन बाइबिल के हिब्रू और आधुनिक भाषा दोनों संस्करणों में आज भी जारी है। मुझे लगता है कि यह जानने लायक बात है, खासकर इसलिए क्योंकि आप "एक, दो, तीन, चार राजाओं" का संदर्भ देख सकते हैं, जो वुल्गेट में जेरोम द्वारा इस्तेमाल किया गया शीर्षक था। रोमन कैथोलिक परंपरा में उन शीर्षकों का अभी भी उपयोग किया जाता है, इसलिए आप एक टिप्पणी देख सकते हैं या

कभी-कभी आपको अपने पढ़ने में "3 किंग्स" का संदर्भ मिल सकता है और आश्चर्य हो सकता है कि यह क्या है। "3 राजा" हमारे 1 राजाओं के समान होंगे, क्योंकि आप देखते हैं कि वुलोट में सैमुअल को पहले और दूसरे राजा कहा जाता था और फिर राजाओं को तीसरा और चौथा राजा कहा जाता था, क्योंकि वलोट में सैमुअल और किंग्स को एक इकाई के रूप में इस्तेमाल किया गया था : एक दो तीन चार।

हिब्रू परंपरा में सैमुअल की पुस्तकों को सैमुअल और राजाओं को किंग्स कहा जाता है और हम इसी का अनुसरण करते हैं। लेकिन मूलतः वे दोनों पुस्तकें एक इकाई थीं। सैमुअल की एक किताब और किंग्स की एक किताब है। दो भागों में विभाजन केवल सेप्टुआजेंट में किया गया था, लेकिन फिर सेप्टुआजेंट के माध्यम से हिब्रू ग्रंथों के इन बाद के संस्करणों में वापस आ गया, ताकि हमारे वर्तमान हिब्रू पाठ में आपको किंग्स की दो किताबें और सैमुअल की दो किताबें मिलें। लेकिन वह वास्तव में मौलिक नहीं था।

हालाँकि, यह स्पष्ट है कि दोनों पुस्तकों की सामग्री मूल एकता का निर्माण करती है। 1 राजा 22:37 में अहाब और 22:30 में यहोशापात की मृत्यु के बाद विभाजन एक मनमाने ढंग से, हालांकि उपयुक्त स्थान पर होता है। अब अहाब उत्तर में राजा था और यहोशापात दक्षिण में राजा था। फर्स्ट किंग्स के अंतिम अध्याय में आपको दो प्रमुख राजाओं की मृत्यु के बारे में पता चलता है, इसलिए यह एक उपयुक्त स्थान है। लेकिन यह इस्राएल के अहज्याह के शासनकाल का विवरण देता है, जो कि 22:51-53 है, प्रथम राजाओं के अंत और दूसरे राजाओं की शुरुआत को ओवरलैप करता है। एलिय्याह के साथ भी यही सच है, जिसके जीवन का वर्णन 1 राजाओं में किया गया है, लेकिन जिसका स्वर्ग में अनुवाद 2 राजाओं में वर्णित है। इसलिए विभाजन कुछ हद तक मनमाना है, लेकिन यथोचित उचित स्थान पर है।

जब एक इकाई के रूप में लिया जाता है तो यह पुस्तक पुराने नियम के सिद्धांत में पूर्व पैगंबरों के बीच एक सुस्पष्ट स्थान ग्रहण कर लेती है। "पूर्व पैगंबर": यह पारंपरिक यहूदी नामकरण या पदनाम है जिसे हम आमतौर पर ऐतिहासिक किताबें कहते हैं। लेकिन पूर्व पैगंबर, यहोशू, न्यायाधीश, सैमुअल और राजा एक साथ कनान में पूर्व-निर्वासित इज़राइल के इतिहास का वर्णन करते हैं। वे मूसा की मृत्यु के बाद शुरू हुए और

नबूकदनेस्सर की मृत्यु के साथ समाप्त हुए, जिसके बाद दुष्ट मेरोडैक आया जिसने इज़राइल की स्वतंत्रता को समाप्त कर दिया। किंग्स डेविड के शासन के अंत, सोलोमन के अधीन यूनाइटेड किंगडम और संपूर्ण रूप से विभाजित साम्राज्य का वर्णन करता है।

बी. सामान्य सामग्री - 3-गुना संरचना

ठीक है, बी है: "सामान्य सामग्री।" किंग्स पूर्व-निर्वासित इज़राइल के इतिहास की अंतिम अवधि का वर्णन करता है। यह डेविड की मृत्यु से शुरू होता है और स्वाभाविक रूप से तीन प्रमुख खंडों में विभाजित होता है। तीन खंड हैं: 1 राजा 1-11, जो सुलैमान के शासन का वर्णन है जिसके तहत इज़राइल और यहूदा के राज्य एकजुट हुए हैं। दूसरा, 1 राजा 12 - 2 राजा 17 इसराइल के पतन तक विभाजित साम्राज्य का इतिहास देते हैं, यानी, अशशूरियों द्वारा सामरिया पर कब्ज़ा करने के साथ उत्तरी साम्राज्य। यह 1 किंग्स 12 से 2 किंग्स 17 तक चलता है - दूसरा प्रमुख खंड। तीसरा है 2 राजा 18-25 जहां आपके पास यरूशलेम के विनाश तक यहूदा का राज्य है, जिसमें गेडेल्याह (2 राजा 25:22-26) और यहोयाकीन (2 राजा 22:25, 27-30) से संबंधित दो पूरक शामिल हैं। अब, जब मैं यरूशलेम के विनाश तक यहूदा का राज्य कहता हूं, तो यह उत्तर में सामरिया के पतन के बाद से अंत तक, 722-721 ईसा पूर्व से 586 ईसा पूर्व तक यहूदा का राज्य है, तो ये तीन प्रमुख हैं अनुभाग।

दूसरे खंड में, दोनों राज्यों का इतिहास अलग-अलग आख्यानों में नहीं, बल्कि समानांतर रूप में दिया गया है। जेरोबाम प्रथम से शुरू होकर, उपयोग की जाने वाली तकनीक एक निश्चित राजा के शासनकाल और गतिविधियों का वर्णन करना है और फिर अन्य राज्यों के सभी राजाओं के पास जाना है जो उसके समकालीन थे और फिर उसी तरह से आगे और पीछे काम करना है। पुस्तक की रचना की विशेषता परिचयात्मक और समापन सूत्रों के ढांचे में प्रत्येक राजा के विवरण की स्थापना है। परिचयात्मक सूत्र में आमतौर पर निम्नलिखित छह तत्व शामिल होते हैं: उत्तराधिकार की आयु, शासनकाल की लंबाई, शासन का स्थान, माता का नाम, शासनकाल का मूल्यांकन और सिंक्रनाइज़ेशन। अर्थात् वह किसी

राजा के अमुक वर्ष में दूसरे राज्य में शासन करने लगा। यह उसके साथ तालमेल बिठाता है। समापन सूत्र में आमतौर पर एक पूरक स्रोत होता है, जैसे: "अमुक के बाकी कृत्य किसी अन्य स्थान पर पढ़े जा सकते हैं।" मृत्यु की घोषणा, दफनाने का स्थान, उत्तराधिकारी का नाम।

1. प्रत्येक राजा के लिए परिचयात्मक रूपरेखा सूत्र

इस रूपरेखा का एक उदाहरण 1 राजा 14:21 में रहूबियाम के साथ है: जब वह राजा बना तब वह इकतालीस वर्ष का था, उसने यरूशलेम में सत्रह वर्ष तक शासन किया, उसकी माता का नाम नामा था, वह एक अम्मोनी थी। 14:29-31 में तुम पढ़ते हो, "रहूबियाम के और सब काम जो उसने किए, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? और रहूबियाम अपने पुरखाओं के संग सो गया, और उसे दाऊदपुर में उनके पास मिट्टी दी गई। और उसका पुत्र अबिय्याह उसके स्थान पर राजा हुआ।" तो आप देखते हैं कि शासनकाल की शुरुआत और अंत में इस प्रकार के सूत्र प्रत्येक राजा के लिए काफी मानक हैं। उनमें वे सभी तत्व शामिल नहीं होते हैं, लेकिन आमतौर पर उनमें उनकी काफी अच्छी संख्या होती है।

अबिजा से शुरुआत करते हुए, एक और तत्व को परिचयात्मक सूत्र में पेश किया गया है, अर्थात् दूसरे राज्य के शासन के साथ तालमेल बिठाना। 1 राजा 15:1: अबिय्याह दक्षिण का दूसरा राजा था; रहूबियाम पहला था, फिर अबिय्याह। अबिय्याह के विषय में यह कहा गया है, नबात के पुत्र यारोबाम के राज्य के अठारहवें वर्ष में अबिय्याह यहूदा का राजा हुआ। तो यह आपका पहला सिंक्रनाइज़ेशन है। यारोबाम उत्तर में पहला राजा था, और उसके शासन के 18^{वें} वर्ष में अबिय्याह ने दक्षिण में शासन करना आरम्भ किया। 1 राजा 15:28 में इस्राएल के नादाब और यहूदा के आसा, 1 राजा 16:10-11 में एला की मृत्यु का वर्ष भी समकालिक है।

2. प्रत्येक राजा का मूल्यांकन , हालांकि, परिचयात्मक और समापन सूत्र में सबसे महत्वपूर्ण

तत्व राजा का निर्णय, या मूल्यांकन है, इस मानदंड के अनुसार कि वह भगवान और वाचा के प्रति वफादार था या नहीं, या मूर्तिपूजा में पड़ गये. क्योंकि इस्राएल के राजा, जो कि उत्तरी साम्राज्य है, सभी ने बेतेल और दान में बछड़े की पूजा में भाग लिया, कहा जाता है कि वे सभी "नबात के पुत्र यारोबाम के मार्ग पर चले, जिसने इस्राएल से पाप कराया,"--1 राजा 15:34. केवल यहोराम , 2 राजा 3:2, और होशे, 2 राजा 17:2 के मामले में, फैसले में कुछ प्रशंसा शामिल है। तो आप उत्तरी राजाओं के साथ देखते हैं, क्योंकि राज्यों के विभाजन के तुरंत बाद यारोबाम ने उन बछड़ों को बेतेल और दान में स्थापित किया, लेकिन वे सभी उत्तरी राजा, नबात के पुत्र यारोबाम के मार्ग पर मूर्तिपूजा पाप में चले गए।

यहूदा के राजाओं का मूल्यांकन कुछ हद तक अधिक सूक्ष्म है, लेकिन जब सामान्य तौर पर उनकी गतिविधियों में ऐसी चीजें होती हैं जो अनुमोदन को पूरा करती हैं, तो यह तथ्य बना रहता है कि उन्होंने ऊंचे स्थानों को नहीं हटाया है। अयोग्य प्रशंसा केवल हिजकिय्याह और योशिय्याह को दी गई है - 2 राजा 18:24, 2 राजा 22:3 और 23:8।

पांच राजाओं को योग्य स्वीकृति दी गई है: आसा, यहोशापात, यहोआश, अजर्याह और योताम। उन पांच राजाओं के बारे में यह कहा गया है कि वे मूलतः अच्छे राजा थे लेकिन उन्होंने ऊंचे स्थानों को नहीं हटाया। तो वह योग्यता है. यदि आप उन पाठों को देखें तो आप उसे देख सकते हैं। सबसे कड़ी अस्वीकृति उत्तरी साम्राज्य के अहाब को दी गई है, 1 राजा 16:29-34, और दक्षिण में मनश्शे, 2 राजा 21।

3. सूत्रों के कालनिर्धारण पर बहस वे सूत्र हैं जो विभिन्न राजाओं के शासनकाल के विवरण का परिचय और समापन करते हैं। यह आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि ये रूपरेखा सूत्र स्वयं लेखक के काम हैं, भले ही उन्होंने अदालत के अभिलेखागार से उनमें शामिल जानकारी का विवरण एकत्र किया हो। हालाँकि, उनकी उत्पत्ति के समय के संबंध में मतभेद मौजूद हैं। *उबेरलिच* को देखो *गेस्चिचटे* 1943।" *दैट्स ट्रेडिशन हिस्टोरिकल स्टडी*, मार्टिन नोथ द्वारा। अंग्रेजी अनुवाद *ज्यूटेरोनोमिस्टिक हिस्ट्री है*, इसका अनुवाद 1981 में किया गया था। यह एक बहुत प्रभावशाली लेखन है। मार्टिन नोथ का सुझाव है कि

ये परिचयात्मक और समापन सूत्र किंग्स की पुस्तक की नवीनतम सामग्री हैं और अंतिम रूपरेखा का निर्माण करते हैं जिसमें पहले की सामग्री निर्धारित की गई थी।

दूसरी ओर, अल्फ्रेड जेपसन, *द सोर्सिज ऑफ द बुक्स ऑफ किंग्स*, 1956, बिल्कुल विपरीत दृष्टिकोण अपनाता है। उनका कहना है कि रूपरेखा सामग्री राजाओं की वर्तमान पुस्तक की सबसे पुरानी सामग्री है, जिसे वह इज़राइल और यहूदा के "समकालिक इतिहास" के रूप में नामित करते हैं, जिसमें दोनों राज्यों के इतिहास की सामग्री भी शामिल है। वह इसकी रचना का श्रेय विभाजित साम्राज्य काल के अंत में रहने वाले एक पुजारी को देते हैं। इसने वह संरचना प्रदान की जिसके भीतर बाद के संपादकों ने अन्य स्रोतों से सभी प्रकार की सामग्री सम्मिलित की। जेपसन इतिवृत्त को राजाओं की वर्तमान पुस्तक का मूल मानते हैं जिसमें हिजकिय्याह के समय तक दोनों राज्यों का संक्षिप्त इतिहास शामिल है। इसकी अधिक विस्तृत चर्चा हमें बहुत दूर तक भटका देगी। मैं उस तरह की चीज़ों में बहुत अधिक शामिल नहीं होना चाहता।

4. क्लोजर डिवीजन - यूनाइटेड किंगडम - 1 किंग्स 1-11

जब हम पहले प्रमुख प्रभाग, 1 राजा 1-11 को करीब से देखते हैं, तो हम पाते हैं कि यह परिचयात्मक सामग्री, अध्याय 1 और 2, और एक निष्कर्ष अध्याय 11 में विभाजित है। इन दो खंडों के बीच, अध्याय 3-10, "ए" पर केंद्रित है। सुलैमान की बुद्धि, अध्याय 3 और 4। "बी" मंदिर और महल का निर्माण है, अध्याय 5-9; और "सी" उसकी समृद्धि और संपत्ति, अध्याय 10। पाठक तुरंत ध्यान देता है कि लेखक ने इस सामग्री को अंतिम अध्याय में सोलोमन के जीवन और गतिविधियों के अंधेरे पक्ष को रखने के लिए व्यवस्थित किया है। यह व्यवस्था पूरी तरह से कालानुक्रमिक नहीं है, जैसा कि विशेष रूप से 11:14 बजे तक देखा जा सकता है। जो अधिकांश भाग में पूर्ववर्ती और निम्नलिखित खंडों की तुलना में बहुत पहले की घटनाओं को संदर्भित करता है। खैर, यह उस पहले खंड की संरचना है। 1 किंग्स 1-11 सुलैमान और यूनाइटेड किंगडम के अंत के बारे में है।

5. दूसरा विभाजन - 1 राजा 12-2 राजा 17 - विभाजित साम्राज्य

दूसरा प्रमुख प्रभाग, 1 राजा 12 - 2 राजा 17, में विभाजित साम्राज्य काल का इतिहास शामिल है। यह सुलैमान की मृत्यु से लेकर 722 ईसा पूर्व में उत्तरी साम्राज्य के असीरियन निर्वासन तक चलता है। यह अब तक के तीन खंडों में सबसे बड़ा है। इस सामग्री का विभाजन, मुझे कहना चाहिए, उपधाराओं में, सुलैमान के शासनकाल से संबंधित सामग्री की तुलना में कहीं अधिक कठिन है। पहले खंड में लगभग 40 वर्ष के इतिहास में एक राजा का वर्णन है। दूसरा प्रमुख प्रभाग, 1 राजा 12 - 2 राजा 17, में सुलैमान की मृत्यु से लेकर सामरिया के पतन तक विभाजित साम्राज्य का इतिहास शामिल है। दूसरे खंड में दोनों राज्यों के असंख्य राजा और 200 वर्ष से अधिक पुराना इतिहास है।

केवल एक ही उदाहरण में दो राज्यों में एक साथ उत्तराधिकार हुआ है। मुख्यतः जब इस्राएल के योराम और यहूदा के अहज्याह को एक ही दिन येहू ने मार डाला था। 2 राजा 9:21-28. इस प्रकार येहू की क्रांति इस खंड, 2 राजा 9 के लिए विभाजन का एक प्रमुख बिंदु प्रदान करती है। खंड 2 और 3 की रूपरेखा देखें।

सवाल यह है कि सामग्री को आगे कैसे विभाजित किया जाए। यहां कुछ बिल्कुल अलग है जो हमारा ध्यान आकर्षित करता है। शेष सामग्री के एक बड़े हिस्से में भविष्यवक्ता एलिय्याह और एलीशा प्रमुख स्थान रखते हैं। ये दो व्यक्ति कई आख्यानो के लिए अभिविन्यास के बिंदु प्रदान करते हैं। एलिय्याह का समय 1 राजा 17:1 से शुरू होता है और एलीशा का समय 2 राजा 2:1 से शुरू होता है। इससे हमें 1 राजा 12- 2 राजा 17 के लिए अभिविन्यास के तीन प्रमुख बिंदु मिलते हैं। 1) 1 राजा 17, एलिय्याह; 2) 2 राजा 2:1, एलीशा; 3) 2 राजा 9, येहू। वे 1 राजा 12 -2 राजा 17 के तीन उपविभाग हैं।

इसे तोड़ने का प्रयास करें, सभी सिंक्रनाइज़ेशन, उत्तर में राजाओं के नियम और दक्षिण में राजाओं के नियम के कारण यह थोड़ा कठिन है। लेकिन मुझे लगता है कि यह तीन तरह की चीजें हैं जिनके बारे में आप कह सकते हैं कि आप कुछ लटका सकते हैं: 1

राजा 17 एलिय्याह है, 2 राजा 2 एलीशा है, और 2 राजा 9 येहू है। येहू एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है। तो ये विभाजन आपको कुछ प्रकार के प्रमुख विभाजन बिंदु देते हैं।

एलिय्याह से पहले के संबंध में, एक उपयुक्त विभाजन बिंदु 1 राजा 14 का निष्कर्ष है। अध्याय 12-14 विभाजित साम्राज्य के पहले दो शासकों, यारोबाम प्रथम और रहबियाम के इतिहास को संभालते हैं। अध्याय 15-16 एलिजा की पहली उपस्थिति के समय तक उनके दोनों उत्तराधिकारियों को संभालते हैं। अध्याय 17-19 में एलिय्याह उनके फोकस का केंद्र है। अध्याय 20-2 किंग्स 1 में एलिय्याह की कहानियाँ शामिल हैं जिनमें दमिश्क के सीरियाई लोगों के साथ अहाब के युद्धों की कहानियाँ शामिल हैं। 2 राजा 2- 8 एलीशा के मंत्रालय के आसपास केन्द्रित हैं, और 2 राजा 9-10 येहू की क्रांति का वर्णन करते हैं।

6. यहूदा के अंतिम दिन - 2 राजा 18-25 2 राजा 11-14 यहूदा के योआश और अमस्याह और इस्राएल के समकालीन राजाओं के शासनकाल से संबंधित हैं। 2 राजा 15-17 यहूदा के समकालीन राजाओं के साथ उत्तरी साम्राज्य के अंतिम दिनों का वर्णन करते हैं। फिर अंतिम प्रमुख खंड, 2 राजा 18-25, यहूदा के राज्य के अंतिम दिनों से संबंधित है, जो हिजकिय्याह के शासनकाल से शुरू होता है और इसमें मनश्शे और योशिय्याह के महत्वपूर्ण शासनकाल भी शामिल हैं। ठीक है, सामान्य सामग्री पर बहुत कुछ। इससे आपको 1 और 2 किंग्स में शामिल सामग्री का कुछ अंदाज़ा मिलता है।

सी. लेखकत्व और स्रोत 1. जेरेमिया एट अल।

"सी" "लेखकत्व और स्रोत" है। सबसे पहले, लेखकत्व. 1 और 2 किंग्स को किसने लिखा यह प्रश्न लंबे समय से चर्चा का विषय रहा है और किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए कोई ठोस आधार नहीं है। मिश्रा में, यिर्मयाह को 1 और 2 राजाओं के लेखक होने का श्रेय दिया जाता है। हालाँकि यह असंभव नहीं है, फिर भी यह अत्यधिक असंभावित लगता है। कुछ, यदि कोई हो, आधुनिक विद्वान इसे एक विश्वसनीय परंपरा के रूप में स्वीकार करते

हैं। हालाँकि ग्लिसन आर्चर अपने *परिचय में* इसे संभव मानते हैं कि यिर्मयाह अंतिम अध्याय को छोड़कर सभी का लेखक था, जो दिलचस्प है। जिसने भी इसे लिखा है उसे किंग्स की अंतिम घटना का स्रोत होना चाहिए जो कि यहोयाकीन की मृत्यु है, 2 राजा 25:27-30। हालाँकि उनकी मृत्यु का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन पाठ में राजा की मेज पर तब तक प्रावधान की बात कही गई है जब तक वह जीवित रहे। हम नहीं जानते कि वह कितने समय तक जीवित रहे। हम जानते हैं कि यहोयाकीन को निर्वासन के 37^{वें} वर्ष में जेल से रिहा किया गया था, जब एविलमेरोडाक बेबीलोन में नबूकदनेस्सर के बाद राजा बना था। यह 562 ईसा पूर्व, या यरूशलेम के पतन के लगभग 25 साल बाद की बात है, 2 राजा 25:27। आप 2 राजा 25:27 को देखें जिसमें आप पढ़ते हैं: “यहूदा के राजा यहोयाकीन के निर्वासन के 37^{वें} वर्ष में, एविलमेरोडाक बेबीलोन का राजा बना, उसने 27^{वें} दिन यहोयाकीन को कारागार से रिहा किया 12^{वाँ} महीना. उसने उससे दयालुता से बात की और उसे बाबुल में उसके साथ रहने वाले अन्य राजाओं की तुलना में उच्च सम्मान की सीट दी। इसलिये यहोयाकीन ने अपने बन्दीगृह के वस्त्र उतार दिए, और जीवन भर राजा की मेज पर नित्य भोजन करता रहा। जब तक यहोयाकीन जीवित रहा तब तक राजा उसे प्रति दिन नियमित भत्ता देता रहा।” अब, यह उनके निर्वासन का 37^{वाँ} वर्ष है, या 562 ईसा पूर्व

राजा योशियाह के 13^{वें} वर्ष में भविष्यवक्ता बनने के लिए बुलाया गया था। यिर्मयाह 1:2 में आप पढ़ते हैं, “यहूदा के राजा आमोन के पुत्र योशियाह के राज्य के तेरहवें वर्ष में यहोवा का वचन उसके पास पहुंचा।” जब वह अभी भी बहुत छोटा था, यिर्मयाह 1:6 में कहता है, “मैं केवल एक बच्चा हूँ।” योशियाह ने 640 ईसा पूर्व में शासन करना शुरू किया यदि हम मान लें कि यिर्मयाह 20 वर्ष का था जब उसे भविष्यवक्ता बनने के लिए बुलाया गया था, तो यहोयाकिन की रिहाई के समय वह 85 वर्ष का रहा होगा। देखिये, 640 ईसा पूर्व योशियाह का 13^{वाँ} वर्ष है। यदि यिर्मयाह उस समय 20 वर्ष का था, तो उसका जन्म 647 ईसा पूर्व हुआ होगा और यदि आप 647 की तुलना 562 से करते हैं, जो कि यहोयाकिन की रिहाई की अभिव्यक्ति का वर्ष है, तो उस समय यिर्मयाह 85 वर्ष का हो गया होगा। यहोयाकीन रिहा हो गया। यदि हम पाँच और वर्षों का समय जोड़ते हैं जिसमें यहोयाकीन ने जेल से रिहा

होकर अपनी नई स्थिति का आनंद लिया, तो हम यिर्मयाह की आयु लगभग 90 वर्ष तक पहुँचते हैं।

हालाँकि यिर्मयाह के लिए 1 और 2 राजाओं में लिखने के लिए इतने लंबे समय तक जीवित रहना असंभव नहीं है, लेकिन विभिन्न कारणों से यह संभव नहीं लगता है। सबसे पहले, ईजे यंग ने अपने *परिचय*, पृष्ठ 188 में यह बताया है कि ऐसा लगता है कि यहोयाचिन के निर्वासन और कारावास का विवरण बेबीलोन में लिखा गया था, लेकिन यिर्मयाह को मिस्र ले जाया गया था। याद रखें, यरूशलेम पर कब्ज़ा करने के बाद, यिर्मयाह मिस्र चला गया - यिर्मयाह 43:1-8। दूसरा, यिर्मयाह का अंतिम अध्याय, अध्याय 52, 2 राजा 24:18-25, 30 के समान है, लेकिन यिर्मयाह 51:64 में लिखा है, "यिर्मयाह के शब्द यहीं समाप्त होते हैं।" देखिए, उस अध्याय का अंतिम वाक्यांश है "यिर्मयाह के शब्द यहीं समाप्त होते हैं," और फिर अध्याय 52 में आपके पास यरूशलेम के पतन का वर्णन है, जो कि राजाओं की पुस्तक में आपके पास मौजूद वर्णन के समान है। ऐसा प्रतीत होता है कि यिर्मयाह 52 और 2 राजा 24:18-25, 30 एक सामान्य स्रोत से प्राप्त हुए हैं जो यिर्मयाह द्वारा नहीं लिखा गया था। दोनों खातों में मामूली मौखिक अंतर हैं। आर्चर, जो यिर्मयाह के लेखकत्व के पक्ष में तर्क देता है, इस तथ्य में इसका प्रमाण पाता है कि 1 और 2 राजाओं में यिर्मयाह का उल्लेख नहीं है। मुझे लगता है कि उसे लगता है कि यिर्मयाह ने लेखक के रूप में खुद पर ध्यान आकर्षित नहीं किया होगा और इसलिए वह खुद के किसी भी संदर्भ को छोड़ देता है, और यह एक संकेत है कि वह लेखक है। हालाँकि, यह खामोशी से दिया गया तर्क है, और शायद ही सम्मोहक है। अन्य पैगम्बरों के नामों का भी उल्लेख नहीं किया गया है। उदाहरण के लिए, यहजेकेल जिसे यहोयाकीन के साथ ही बंदी बना लिया गया था। योना का उल्लेख 2 राजा 14:25 में किया गया है। इसलिए कुछ भविष्यवक्ताओं का उल्लेख किया गया है, लेकिन कुछ का नहीं; इसलिए मुझे नहीं लगता कि आप इस तथ्य से कोई निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यिर्मयाह का उल्लेख सबूत के रूप में नहीं किया गया है कि वह लेखक है। इसलिए यिर्मयाह को किंग्स के लेखक के रूप में स्थापित करने के लिए बहुत कम सबूत हैं।

2. राजाओं के साहित्यिक आलोचनात्मक व्यवस्थाविवरण संस्करण

साहित्यिक-आलोचनात्मक विचारधारा में ऐसे लोग भी शामिल हैं जिन्होंने जोशुआ, जजेज, सैमुअल और किंग्स तक विस्तारित जेईडीपी स्रोतों को खोजने का प्रयास किया है। आज इसका बहुत कम अनुसरण किया जाता है, हालाँकि ओटो ईसफेल्ड इस दृष्टिकोण के समर्थक हैं। इस पूर्व-ड्यूटेरोनोमिस्टिक सामग्री को फिर ड्यूटेरोनोमिस्टिक संपादक या संपादकों द्वारा पुनर्गठित और जोड़ा गया माना जाता है। आम तौर पर स्वीकृत आलोचनात्मक विचार यह है कि राजाओं के दो ड्यूटेरोनोमिस्टिक संस्करण थे। लगभग 600 ईसा पूर्व में एक, योशियाह की मृत्यु के कुछ ही समय पहले या कुछ ही समय बाद विभिन्न रूप से देखा गया और फिर 550 ईसा पूर्व निर्वासन के दौरान रचित संस्करणों के साथ एक संशोधन इस दृश्य को बाद की व्याख्याओं से मूल सामग्री के व्यापक पृथक्करण की आवश्यकता है, जिसका विवरण हम नहीं दे सकते यहां चर्चा करें. आरके हैरिसन *ओल्ड टेस्टामेंट के रूप में परिचय* नोट करता है, "दो ड्यूटेरोनोमिक संपादकों के अभिधारणा को स्वीकार करने वालों के बीच असहमति की सीमा सिद्धांत की बुनियादी कमजोरी का संकेत है" (पृष्ठ 731)। उस मुद्दे ने साहित्य में एक बहुत बड़ा तर्क पैदा कर दिया है। किंग्स का विश्लेषण करते हुए, आलोचक मूल सामग्री और सामग्री के बाद के ड्यूटेरोनोमिक संपादन को अलग करने का प्रयास करते हैं। अधिक मौलिक सामग्री क्या है और, मान लीजिए कि सामग्री के इस ड्यूटेरोनोमिस्टिक संपादन के दो संस्करण थे और पहले को दूसरे से अलग करना, यह वास्तव में बहुत अधिक असहमति के साथ अत्यधिक जटिल सामग्री है। उस पर किताब लिखने वाले प्रत्येक व्यक्ति का निष्कर्ष अलग-अलग होता है कि प्रत्येक अनुच्छेद की पहचान किस प्रकार की जाती है। मुझे ऐसा लगता है कि लेखक भविष्यवक्ताओं की पंक्ति का कोई व्यक्ति था। हम लेखक को नहीं जानते; लेखक अज्ञात है, लेकिन भविष्यवक्ताओं ने ठीक यही किया। किंग्स वास्तव में इतिहास की एक भविष्यसूचक व्याख्या है। और ऐसा लगता है जैसे इस सामग्री को एक साथ लाने वाला कोई भविष्यवक्ता रहा होगा, लेकिन हम नहीं जानते कि कौन है।

लेखकत्व के संबंध में सबसे प्रभावशाली, वर्तमान विचार मार्टिन नोथ का ड्यूटेरोनोमिक इतिहास सिद्धांत है। मार्टिन नोथ देखें *ड्यूटेरोनोमिक हिस्ट्री* 1981 में अंग्रेजी में प्रकाशित हुई। नोथ के अनुसार, पूर्वजों के एक ड्यूटेरोनोमिक-ऐतिहासिक समूह ने राजाओं के लिए सामग्री को छांटा और इतिहास के ड्यूटेरोनोमिस्टिक धर्मशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार इसे व्यवस्थित किया। उनके विचार में व्यवस्थाविवरण से लेकर दो राजाओं तक की संपूर्ण सामग्री के लिए केवल एक ही लेखक था। देखिए, यह वास्तव में पुराने वेलहाउज़ेन दृष्टिकोण पर आधारित है कि योशियाह के समय मंदिर में पाई गई वाचा की पुस्तक व्यवस्थाविवरण की पुस्तक थी। इसे काफी हद तक नजरअंदाज कर दिया गया था या खो दिया गया था। लेकिन सिर्फ इतना ही नहीं, इसकी रचना योशियाह के समय में यरूशलेम में पूजा को केंद्रीकृत करने के प्रयास में की गई थी। योशियाह के समय तक व्यवस्थाविवरण की पुस्तक वास्तव में अस्तित्व में नहीं थी। लेकिन किसी भी मामले में, नोथ के विचार में, व्यवस्थाविवरणवादी इतिहासकार ने अपने संपूर्ण इतिहास के परिचय के रूप में व्यवस्थाविवरण 1-4, साथ ही व्यवस्थाविवरण 29-30 को जोड़ा। उन्होंने यहोशू, न्यायाधीशों, सैमुअल और किंग्स को व्यवस्थाविवरण की सामग्रियों के आदर्शों द्वारा शासित एक धार्मिक प्रस्तुति के रूप में संकलित किया। इसका मतलब यह है कि नोथ, 1 और 2 राजाओं के लिए निर्वासन काल में रहने वाले एक ही लेखक का काम था। इस लेखक ने एक राष्ट्र के रूप में इज़राइल के अस्तित्व में राजशाही काल के इतिहास को ड्यूटेरोनोमिस्टिक परिप्रेक्ष्य के अनुरूप प्रस्तुत करने के लिए अपने निपटान में विभिन्न परंपराओं और स्रोतों का उपयोग किया। नोथ के विचार में, 1 और 2 राजाओं में रूपरेखा उसी समय बनाई गई थी जब कथा सामग्री को एक एकीकृत रचना में ढाला गया था। रूपरेखा का लेखक कथा सामग्री के लेखक/संपादक के समान है। यह कृति एक लेखक के हाथ से सावधानीपूर्वक नियोजित ग्रंथ है।

अब, उसके संबंध में, इसमें कोई समस्या नहीं है। इस सिद्धांत के अन्य पहलुओं में बहुत सारी समस्याएं हैं लेकिन कम से कम वह पुस्तक में एक एकीकृत योजना देखते हैं। और वह पुस्तक में व्यवस्थाविवरण का प्रभाव देखता है। आज महत्वपूर्ण विद्वानों के बीच

आम सहमति है कि 1 और 2 किंग्स एक ऐतिहासिक कार्य है जो एक ड्यूटेरोनोमिक दृष्टिकोण द्वारा शासित है जिसके माध्यम से इज़राइल और यहूदा के विभिन्न राजाओं के कार्यों का मूल्यांकन किया जाता है।

3. ड्यूटेरोनोमिस्टिक क्रिटिकल अप्रोच और वेन्रॉय की प्रतिक्रिया की चर्चा

हालाँकि हम पुस्तक के इस लक्षण वर्णन से सहमत हो सकते हैं, लेकिन "ड्यूटेरोनोमिस्टिक" या "ड्यूटेरोनॉमिक" शब्द का उपयोग करते समय एक अंतर को ध्यान में रखना अच्छा होगा। आलोचनात्मक हलकों में यह शब्द आम तौर पर इस पूर्वधारणा पर आधारित है कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक योशियाह के शासनकाल के दौरान सुधार से कुछ समय पहले लिखी गई थी और इस सुधार के लिए आधार प्रदान किया गया था। व्यवस्थाविवरण के विचारों को नया और क्रांतिकारी माना जाता है, ये विचार इज़राइल में राजशाही काल में काफी देर से उत्पन्न हुए थे। योशियाह का समय, दक्षिणी साम्राज्य के अंत से ठीक पहले, 586 ईसा पूर्व का है। निस्संदेह, इस तरह के दृष्टिकोण पर गंभीर आपत्तियाँ हैं। व्यवस्थाविवरण में परिणामी आशीर्वाद या अभिशाप के साथ कानून का पालन करने पर जोर सिर्फ व्यवस्थाविवरण नहीं है, यह एक्सोडस और लेवितस में वाचा है, जितना व्यवस्थाविवरण में है। निःसंदेह, ये आलोचनात्मक विद्वान क्या कहेंगे कि निर्गमन और लेवितिकस, अधिकांश भाग के लिए, बाद की, या पूर्व-निर्वासन सामग्री थे। यह बहुत जटिल हो जाता है यदि आप बाइबिल की सामग्री को स्वीकार नहीं करते हैं जो हमारे सामने प्रस्तुत की गई है, जिसमें एक्सोडस, लेवितस और ड्यूटेरोनॉमी मूल रूप से मूसा के समय की हैं।

हालाँकि, क्रिटिकल स्कूल यरूशलेम में पूजा के केंद्रीकरण की ड्यूटेरोनोमिक आवश्यकता के रूप में देखी जाने वाली चीज़ों का भी बहुत कुछ करता है, जिसके कारण पूरे देश में ऊंचे स्थानों को नष्ट करना आवश्यक हो गया। इस केंद्रीकरण की आवश्यकता को कथित तौर पर व्यवस्थाविवरण 12 में पढ़ाया जाता है और यह 621 ईसा पूर्व के आसपास अस्तित्व में आया, यह अपने आप में चर्चा का विषय है कि क्या व्यवस्थाविवरण 12 को वास्तव में एक एकल अभयारण्य की आवश्यकता है, कि एक केंद्रीय वेदी और अन्य

सभी पर एकमात्र वैध पूजा की अनुमति है वेदियाँ स्वयं अवैध हैं। मुझे नहीं लगता कि व्यवस्थाविवरण ऐसा कहता है, लेकिन इस दृष्टिकोण का यही दृष्टिकोण है।

आलोचनात्मक दृष्टि से, यह आवश्यकता तब प्राथमिक मानक बन गई जिसके द्वारा प्रत्येक राजा का मूल्यांकन किया जाता था। हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यह इतना स्पष्ट नहीं है कि व्यवस्थाविवरण 12 में पूजा के केंद्रीकरण की आवश्यकता है। और इसके अलावा, जब कोई व्यवस्थाविवरण और इसके लेखकत्व की तारीख पर सामान्य आलोचनात्मक स्थिति को स्वीकार करता है, तो उसे इस नवीनतम मानक द्वारा पहले के राजाओं के मूल्यांकन को उनके शासनकाल का आकलन करने के एक कृत्रिम और विकृत तरीके के रूप में देखना चाहिए। दूसरे शब्दों में, यदि व्यवस्थाविवरण योशियाह के समय तक नहीं था, तो आप व्यवस्थाविवरण के आधार पर दक्षिणी साम्राज्य के पहले राजा रूबियाम के शासनकाल का आकलन कैसे कर सकते हैं, यदि व्यवस्थाविवरण 931 ईसा पूर्व में अस्तित्व में नहीं था? यदि व्यवस्थाविवरण 300 वर्ष बाद 621 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में नहीं था, तो आप व्यवस्थाविवरण के आधार पर रियोबाम के शासनकाल का आकलन कैसे कर सकते हैं ?

इसलिए, यदि आप व्यवस्थाविवरण के लिए इस महत्वपूर्ण स्थिति और दिनांक 621 को स्वीकार करते हैं तो आपको इस अंतिम मानक द्वारा पहले के राजाओं के मूल्यांकन को उनके शासनकाल का आकलन करने के एक कृत्रिम और विकृत तरीके के रूप में देखना चाहिए। एक व्यवस्थाविवरणवादी इतिहास लेखक को इतिहास के तथ्यों की तुलना में अपने धर्मशास्त्र में अधिक रुचि रखने वाले के रूप में देखा जाना चाहिए। तो उनका लेखन इस अर्थ में एक धर्मशास्त्रीय इतिहास बन जाता है कि उनके धर्मशास्त्र में जो वास्तव में हुआ था उसकी विकृतियों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, वेलहाउज़ेन ने राज्य के विभाजन और जेरुबाम प्रथम द्वारा बेथेल और डैन में पूजा केंद्रों की स्थापना के संबंध में निम्नलिखित बयान दिया: "दूसरी ओर, यरूशलेम में देखे गए मोज़ेक पंथ से उनके प्रस्थान के लिए, यह पहली बार आरोप लगाया गया था केवल बाद के यहूदियों द्वारा उनके विरुद्ध पाप के रूप में। उस समय, धर्म ने उनके अलगाव के रास्ते में कोई बाधा नहीं डाली; इसके

विपरीत, यह वास्तव में सुझाव देता है कि इसने इसे बढ़ावा दिया। जेरूसलम पंथ को अभी तक एकमात्र वैध नहीं माना गया था। यारोबाम द्वारा बेथेल और दान में स्थापित की गई बात को समान रूप से सही माना गया। देवताओं की छवियाँ तीनों स्थानों पर प्रदर्शित की गईं, और वास्तव में हर उस स्थान पर जहाँ भगवान का घर पाया गया। दूसरे शब्दों में, यारोबाम के समय की वास्तविक स्थिति, ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहास में पाए गए प्रतिनिधित्व से काफी भिन्न होने का आरोप है।

यह वेलहाउज़ेन को यहूदा से निकले परमेश्वर के उस व्यक्ति की पूरी कहानी की वास्तविकता पर सवाल उठाने के लिए मजबूर करता है जिसने 1 राजा 13 में यारोबाम की वेदी के खिलाफ बात की थी। देखें कि 1 राजा 13 में यहूदा से निकला परमेश्वर का आदमी जाता है और बेथेल में उस वेदी की निंदा करता है। ठीक है, अगर उस शुरुआती समय में पूजा के केंद्रीकरण का कोई विचार नहीं था, जिसे वेलहाउज़ेन ने व्यवस्थाविवरण के लिए आवश्यक माना था जो उस समय अस्तित्व में नहीं था, तो यहूदा से बाहर भगवान का आदमी क्यों आगे बढ़ेगा और पूजा की निंदा करेगा बेथेल की वेदी पर? खैर, वेलहाउज़ेन को नहीं लगता कि उसने ऐसा किया। उनका मानना है कि यह बाद के समय की रचना है जो समय के साथ व्यवस्थाविवरण के धर्मशास्त्र को पढ़ने की कोशिश कर रही है। यह कहानी यह बताने के लिए विकसित की गई है कि यह विचार एक प्राचीन विचार था, जबकि वास्तव में यह नहीं था। तो यह वेलहाउज़ेन को उस पूरी कहानी की वास्तविकता पर सवाल उठाने के लिए मजबूर करता है, जो वह करता है। उसे नहीं लगता कि ऐसा कभी हुआ है।

अन्यत्र, वेलहाउज़ेन 1 और 2 राजाओं के ड्यूटेरोनोमिस्टिक संशोधन के बारे में कह सकते हैं, "जैसा कि हम खोजने की उम्मीद करते हैं, यह संशोधन उन सामग्रियों से अलग है जिन पर काम आधारित है, इसलिए यह उन पर हिंसा करता है।" वह पुस्तक के तथ्यों के बारे में बात करते हैं, जिनका न केवल मूल्यांकन किया जा रहा है, बल्कि ड्यूटेरोनोमी की जोसियानिक पुस्तक के अनुसार उन्हें तैयार भी किया गया है। यह सब निर्वासित लोगों को उनकी स्थिति के लिए धार्मिक स्पष्टीकरण देने के लिए किया गया था। लेकिन इसका मतलब यह है कि जहां भी योशियाह के समय से पहले के ग्रंथों में ड्यूटेरोनोमिक विचार और

दृष्टिकोण पाए गए थे, उन्हें वास्तव में जो हुआ उसके द्वितीयक सम्मिलन और विकृतियों के रूप में माना जाता था। फिलहाल लेखकत्व के लिए बहुत कुछ। हम उस पर बाद में वापस आएंगे।

4. स्रोतों के रूप में प्रयुक्त राजाओं के इतिहास

चूँकि 1 और 2 राजा इतनी लंबी अवधि तक फैले हुए हैं, इसलिए यह उम्मीद करना स्वाभाविक है कि लेखक ने ऐतिहासिक सामग्री के विभिन्न स्रोतों का उपयोग किया था जो उसके पास थे। ऐसा प्रतीत होता है कि यह इस्राएल के राजाओं का इतिहास और यहूदा के राजाओं का इतिहास रहा है, जिसे अक्सर "इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक" या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक के रूप में जाना जाता है। 1”

1 राजा 14:19 को देखें। आपको यह संदर्भ मिलता है जो काफी नियमित रूप से उपयोग किया जाता है। 1 राजा 14:19 यारोबाम के बारे में चर्चा करने के बाद कहता है, "यारोबाम के शासन की अन्य घटनाएँ, उसके युद्ध और उसने किस प्रकार शासन किया, यह सब इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है।" इसलिए लेखक अपने पाठकों को किसी अन्य स्रोत की ओर संदर्भित करता है, जो संभवतः कुछ सुलभ था यदि कोई अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता था। 1 राजा 15:23 आपको दूसरा स्रोत देता है : "आसा के शासनकाल की अन्य घटनाएँ, उसकी सारी उपलब्धियाँ, उसके सभी काम और उसके द्वारा बनाए गए शहर, यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे गए हैं।" 1 और 2 राजाओं की पुस्तकों के माध्यम से उन दो स्रोतों के 33 संदर्भ हैं। काफी सारे सन्दर्भ थे. इसलिए जब आप इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक तक पहुँचते हैं, तो वह उत्तर है। यह इतिहास का संदर्भ नहीं दे सकता। ऐसा लगता है कि दो स्रोत हैं, शायद अदालती रिकॉर्ड या ऐसा कुछ, जो किसी तरह से रखे गए थे और पहुंच योग्य और ज्ञात थे। इतिहास में भी कई स्रोतों का उल्लेख किया गया है। और यह हो सकता है कि इतिहास के लेखक की 1 और 2 राजाओं तक कुछ पहुंच हो - यह संभव है क्योंकि इतिहास बाद में लिखा गया है।

निःसंदेह, प्रश्न इन दोनों स्रोतों की प्रकृति के संबंध में उठता है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि उनका संदर्भ राज्य के विभाजन के बाद ही शुरू होता है, और संभवतः वे स्रोत थे जो उस समय शुरू हुए थे। हालाँकि, यह इतना स्पष्ट नहीं है कि क्या वे आधिकारिक अदालत के इतिहास थे या किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखा गया इतिहास था जिसकी आधिकारिक अदालत के इतिहास तक पहुँच थी। अंतिम दृष्टिकोण के पक्ष में लोगों का कहना है कि उनके संदर्भ का विषय यह मानता है कि वे उन सभी के लिए सुलभ थे जो उनसे परामर्श करना चाहते हों। आधिकारिक अदालती इतिहास के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। फिर भी, कौन जानता है कि ऐसी सामग्री कितनी सुलभ रही होगी? यह भी सवाल उठाया जा सकता है कि क्या आधिकारिक अदालत के इतिहास में राजत्व हासिल करने की साजिश का रिकॉर्ड शामिल होना चाहिए था। 1 राजा 16:20 कहता है, "जिम्मी के शासनकाल की अन्य घटनाओं और उसके द्वारा किए गए विद्रोह के बारे में क्या वे इस्राएल के राजाओं की पुस्तकों में नहीं लिखे हैं?" हम वास्तव में इस बारे में ज्यादा नहीं जानते कि ये स्रोत क्या थे, लेकिन इनका बार-बार उल्लेख किया जाता है।

सुलैमान के इतिहास के लिए एक अन्य स्रोत का उपयोग किया गया था, जिसका उल्लेख 1 राजा 11:41 में "सुलैमान के इतिहास की पुस्तक" के रूप में किया गया है। यहां तो यह तय करना और भी मुश्किल है कि कौन लिख रहा है, उसका चरित्र क्या है। कुछ लोग कहते हैं कि यह पूरी तरह से एक व्यावहारिक, प्रचारात्मक कार्य था। दूसरों का कहना है कि यह एक इतिहास था, जिसमें विशेष रूप से सुलैमान के शासनकाल का राजनीतिक विवरण शामिल था। दूसरों का कहना है कि यह केवल राजनीतिक सामग्री की तुलना में व्यापक सामग्री थी। इस मुद्दे पर लंबी-लंबी चर्चाएं तो होती हैं, लेकिन ठोस निष्कर्ष निकालने का कोई आधार नहीं मिलता। लेकिन एक और स्रोत है, सोलोमन के इतिहास की पुस्तक जिसका उल्लेख 1 राजा 11:41 में किया गया है। इसकी अत्यधिक संभावना है कि किंग्स के लेखक के पास अन्य स्रोतों तक पहुंच थी जिसका उन्होंने विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया है। यह विशेष रूप से राजाओं की सामग्री के मामले में है, जिसकी किसी को अदालत के इतिहास से प्राप्त होने की उम्मीद नहीं होगी, उदाहरण के लिए, भविष्यवक्ता एलिजा और

एलीशा से संबंधित व्यापक कथाएँ। यह निर्धारित करना संभव नहीं है कि इस प्रकार की सामग्री किसी एकल स्रोत से प्राप्त हुई है या विभिन्न अलग-अलग भविष्यवाणियों से।

सामान्य तौर पर, अधिकांश विद्वान बाद की स्थिति की ओर झुके हुए हैं। एचएच राउली इन स्रोतों को भविष्यसूचक जीवनियाँ कहते हैं। उनका कहना है कि इनमें से कितने का उपयोग किया गया, हम नहीं कह सकते। लेकिन एलिय्याह और एलीशा तथा यशायाह से संबंधित कहानियों के चक्र के अलावा हमें 1 राजा 22 में मीकायाह की कहानी मिलती है। मुझे ऐसा लगता है कि आधिकारिक अदालत के इतिहास के अलावा, लेखक के पास कुछ प्रकार की सामग्री तक पहुंच रही होगी जो इससे संबंधित थी एलिय्याह और इन भविष्यवक्ताओं, और इस पुस्तक को लिखने में उस सारी सामग्री का एक साथ उपयोग किया। लेकिन हमारे पास सटीक रूप से यह जानने के लिए बहुत सारे ठोस सबूत नहीं हैं कि ये स्रोत क्या थे और उनमें से कितने थे।

3. रचना की तिथि

तीसरा, रचना की तिथि. यह बेबीलोन की जेल से यहोयाकीन की रिहाई की घोषणा के बाद और, निहितार्थ से, उसकी मृत्यु तक बेबीलोन में उसकी सम्मानजनक स्थिति की घोषणा के बाद लिखा गया होगा। हम यहोयाकीन की मृत्यु की तारीख नहीं जानते। लेकिन किसी भी मामले में, यह नबूकदनेस्सर की मृत्यु और एविल- मेरोडाच के सिंहासन पर आने के बाद, लगभग 562 ईसा पूर्व में हुआ था, इसलिए शायद 562 के बाद बहुत अधिक समय नहीं था, यह सबसे प्रारंभिक पुस्तक लिखी जा सकती थी क्योंकि इसमें वह शामिल है सामग्री।

हालाँकि, ऐसे विचार हैं जिनके कारण कुछ लोग पुस्तक की अंतिम सामग्री को पहले की मूल रचना में जोड़ा गया मानते हैं। कई उदाहरणों में कहा जाता है कि निर्वासन-पूर्व काल की कुछ चीज़ें "आज तक" अस्तित्व में हैं। कुछ लोगों का मानना है कि यह पूर्व - निर्वासन काल की रचना का संकेत है। उदाहरण के लिए, 1 राजा 8:8 में हम उन डंडों के बारे में पढ़ते हैं जिनका उपयोग सन्दूक को ले जाने के लिए किया जाता था। ये खंभे इतने

लंबे थे कि उनके सिरे पवित्र स्थान से भीतरी पवित्र स्थान के सामने तो देखे जा सकते थे, लेकिन पवित्र स्थान के बाहर नहीं, और "वे आज भी वहीं हैं।" देखिए ऐसा 1 राजा 8:8 में कहा गया है। मंदिर के नष्ट होने और सन्दूक के खो जाने के बाद, अब ऐसी स्थिति नहीं रही।

हम 1 राजा 9:20-21 में पढ़ते हैं कि सुलैमान ने हित्तियों, अम्मोरियों, परिज्जियों, हिव्वियों, और यबूसियों में से बचे हुए लोगों को दास सेना में भर्ती किया "जैसा कि आज तक होता है।" मामले की प्रकृति के अनुसार, यह तब तक लागू रहा जब तक यहूदा का राज्य अस्तित्व में रहा। 1 राजा 12:19 में दिए गए कथन कि इस्राएल "आज तक" दाऊद के घराने के विरुद्ध विद्रोह कर रहा है, और 2 राजा 8:22 कि एदोम "आज के दिन" तक यहूदा के विरुद्ध विद्रोह कर रहा है, के निरंतर अस्तित्व का अनुमान लगाया गया है यहूदा का साम्राज्य। इसी तरह के अन्य संदर्भ कम समस्याग्रस्त हैं, लेकिन, फिर भी, एक साथ लेने पर वे एक लेखक के साथ बेहतर फिट बैठते हैं जो निर्वासन के बाद के समय में बेबीलोन में रहने की तुलना में पूर्व-निर्वासन समय में फिलिस्तीन में रहते थे।

यदि कोई निर्वासन-पूर्व कार्य को निर्वासन के बाद के समय में जोड़ने की संभावना को स्वीकार करता है, तो प्रश्न यह है कि निर्वासन-पूर्व कार्य कब अस्तित्व में आया? जब कोई ध्यान देता है कि स्रोत का संदर्भ यहूदा के राजाओं के इतिहास में दिया गया है, तो उसे राजा यहोयाकीम के शासन के संदर्भ में उद्धृत किया गया है, लेकिन उसके उत्तराधिकारियों, यहोयाचिन और सिदकिय्याह के संबंध में अनुपस्थित है। फिर यह मानने का कुछ कारण है कि पहली रचना यहोयाकिम की मृत्यु और 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के विनाश के बीच की अवधि में हुई थी, दूसरे शब्दों में, कैद से पहले आखिरी वर्षों में। फिर निष्कर्ष को निर्वासन समय में रहने वाले व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है। हालाँकि यह तिथि और लेखकत्व पर एक संभावित दृष्टिकोण है, यह काफी हद तक "आज तक" के बयानों पर आधारित है। एक विकल्प यह है कि इन बयानों को किंग्स के अंतिम संकलन के बजाय मूल स्रोत के रूप में लिया जाए।

नोट 2 इतिहास 5:9 की तुलना 1 राजा 8:8 से की गई है। 2 इतिहास 5:9 कहता है, "ये डंडे इतने लंबे थे," ये वे डंडे हैं जो सन्दूक को ले जाते हैं, "कि सन्दूक से फैले उनके सिरे

भीतरी पवित्रस्थान के सामने से तो देखे जा सकते थे, परन्तु पवित्रस्थान के बाहर से नहीं, और वे आज भी वहीं हैं।" 1 राजा 8:8, "ये खम्भे इतने लंबे थे कि उनके सिरे भीतरी पवित्र स्थान के सामने के पवित्र स्थान से तो दिखाई देते थे, परन्तु पवित्र स्थान के बाहर से नहीं, और वे आज भी वहीं हैं।"

अब 1 राजा 8:8 की तुलना में 2 इतिहास 5:9 पर ध्यान दें। इतिहास निश्चित रूप से निर्वासन के बाद का था। फिर भी शब्द वही हैं। सबसे संभावित व्याख्या यह है कि इतिहासकार ने केवल अपने स्रोत, अर्थात् 1 किंग्स को उद्धृत किया है। किंग्स का अनुपालक/लेखक अपने स्रोतों के साथ ऐसा क्यों नहीं कर सका? इससे एक निर्वासित संपादक द्वारा किंग्स की पिछली पुस्तक का संशोधन प्रस्तुत करने की समस्या कम हो जाएगी और निर्वासन में रह रहे एक लेखक द्वारा अपने पास उपलब्ध विभिन्न स्रोतों का उपयोग करके रचना की एकता को बनाए रखा जा सकेगा। दूसरे शब्दों में, "आज तक" बयान उस स्रोत के बयान हो सकते हैं जिन्हें लेखक ने बस उद्धृत किया है, न कि यह कि "आज तक" उस निर्वासन अवधि तक फैला हुआ है।

यदि आप ऐसा नहीं कहते हैं, तो आपको लगभग यह कहना होगा कि पुस्तक का वह भाग निर्वासन से पहले लिखा गया था; लेकिन यह अंतिम भाग यहोयाकीन की कैद और रिहाई से संबंधित है, जिसे बाद में एक संपादक ने जोड़ा था। लेकिन इसका एक तरीका यह सुझाव है। टर्मिनस *एंटे क्रेम*, जिसके पहले, बेबीलोन की कैद का अंत है, 539 ईसा पूर्व। इस अंत का कोई उल्लेख नहीं है और कोई संकेत नहीं है कि यह निकट है। इस समय से पहले पुस्तक अपने अंतिम रूप में पहुँच गई होगी। हालाँकि यह मौन से एक तर्क है, जो अक्सर इस मामले में आश्वस्त करने वाला नहीं होता है कि कैद से वापसी इतनी महत्वपूर्ण है कि जिस लेखक ने इसे संबंधित किया है वह शायद ही इसके अंत के बारे में चुप रह पाता, अगर यह पहले ही हो चुका होता। यह काफी निश्चित लगता है कि कैद का अंत अभी तक दिखाई नहीं दे रहा था,

मैं सोचता हूँ कि मुझे यहीं रुकना चाहिए, मेरे पास एक और पुस्तिका है जिसमें इस

परिचयात्मक सामग्री के बारे में थोड़ा और विस्तार से बताया गया है, जिसे हम संभवतः अगले सप्ताह के पहले घंटे में देखेंगे और फिर हम राजाओं की पुस्तक पर चर्चा करेंगे।

केट टोर्टलैंड द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया